

अवधूत शिरोमणि परमसन्त



महात्मा श्री निरञ्जननाथ विरचित

❀ श्री भवानी-शतक ❀

भूमिका

महामहोपाध्याय श्री नारायण शास्त्री खिस्ने

प्रकाशक

श्री तारोन्त्रक अध्यात्म मण्डल, पटना



❀ श्री गुरु गणेश ❀

अवधूत शिरोमणि परमसन्त श्री निरञ्जननाथ विरचित

❀ श्री भवानी-शतक ❀

सम्पादक श्री
मोदी जी को

(श्री पादुकादशम् एवं शिवाष्टक सहित)

७/३/५९

सम्पादक

पं० आनन्द सुब्रह्मण्य शास्त्री

प्रकाशक

श्री तान्त्रिक अध्यात्म मण्डल

श्री शिवपुरी पदवा २

प्रकाशक :

श्री महावीर प्रसाद सिंह

श्री तान्त्रिक अध्यात्म मन्दल

श्री शिवपुरी

पटना-८००००२

प्रथम संस्करण १९८५

१००० प्रतियाँ

[सर्वाधिकार प्रकाशकाधिन]

मूल्य (■) रु० ७.५० 

मुद्रक :

बानी प्रेस, तपोवन, रामनगर

वाराणसी-२२१००८

फोन-२३४८

ॐ श्री गुरु गणेश ॐ

प्राक्कथन

मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे अवधूत शिरोमणि महात्मा श्री निरञ्जन जी महाराज के श्रीमुख से निर्गलित “श्री भवानी-शतक” का संक्षिप्त प्राक्कथन लिखने का अवसर मिला है। ‘श्री भवानी-शतक’ की व्याख्या तो अवधूत जी ही कर सकते हैं। मेरी यह शक्ति नहीं कि मैं इस पर कुछ लिख सकूँ। परन्तु अवधूत महात्माजी का स्नेहपूर्ण आदेश भी अनुल्लंघनीय है, अतः मैं कुछ लिखने की चेष्टा कर रहा हूँ।

साधक शिरोमणि महात्मा श्री निरञ्जन जी को प्रायः सारा भारतवर्ष ही जानता है। विशेषतः बिहार और बंगाल में तो इनके हजारों भक्त और शिष्य हैं। कुछ वर्ष पूर्व ये काशी पधारे थे तब मुझे इनके सत्संग का लाभ हुआ था। ये जन्मना कच्छ निवासी सारस्वत ब्राह्मण हैं, परन्तु इनके सदृश महात्मागण किसी जाति, कुल अथवा प्रान्तीयता के बन्धन में बँध नहीं सकते। महात्मा श्री निरञ्जन जी भी वैसे ही सर्व-बन्धन मुक्त, स्वैर विहारी, महाज्ञानी

श्री जगदम्बा के परम भक्त, महासाधक, जीवनमुक्त पुरुष हैं। इनके अन्तरङ्ग शिष्यों से इनकी जीवनचर्या का जो कुछ आभास मिला है, उससे यह निःशङ्क रूप से कहा जा सकता है कि शास्त्रों में जिस निस्त्रैगुण्य मार्ग का वर्णन मिलता है, ये महात्मा उसी निस्त्रैगुण्य मार्ग के परम सिद्ध हैं। 'निस्त्रैगुण्ये पथि विचरतां को विधिः को निषेधः' हम लोग गृहस्थ धर्म के बन्धन में बंधे हैं। हमलोगों की यह अनाधिकार चेष्टा होगी, यदि हम इन महात्माओं के जीवन चरित्रों का विश्लेषण करने का प्रयत्न करें। महात्मा जी ने अपनी रचना 'भवानी-शतक' मुझे देते हुए कहा कि इसे देख लिया जाय। किन्तु इसमें कुछ विवेचना या आलोचना करने का मेरा साहस नहीं हुआ, क्योंकि मैं जानता था कि श्री निरञ्जन जी अच्छे कवि, वक्ता तथा लेखक हैं।

प्रकृत 'श्री भवानी-शतक' उनकी बुद्धिपूर्वक रचना नहीं हैं, अपितु उनके मुखारविन्द से निर्गलित दिव्य स्तुति है, इसमें फेर बदल (परिवर्तन) करना उचित नहीं है। पुराण आदि आर्ष ग्रन्थों में जिस प्रकार व्याकरण, छन्द आदि की त्रुटियों का विचार न कर वह दिव्य वाणी समझ-

(१)

कर भक्तिभाव से गायी जाती है, उसी प्रकार यह 'श्री भवानी शतक' भी है। मेरे इस कथन के उदाहरण इसी 'श्री भवानी शतक' में ही स्थल-स्थल पर दृष्टिगोचर होते हैं। जैसे पृष्ठ ५ पद ६ में—

महाप्राण-शक्ति जगादे प्रभञ्जन,
जहाँ शून्य में मव्य बिन्दू निरञ्जन ।
किसी ज्ञान-विज्ञान की पहुँच नाही
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

पृष्ठ ८ पद १६ में—

सदा सर्वदा शारदा श्री परा हो
सदा रत्न करवा सुधा का भरा हो ।
शुची शाम्भवी दिव्यता की निशानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

इन उदाहरणों से विवेचकों को स्पष्ट प्रतीत होता है कि कवि जैसे उन्मत्ती अवस्था में यह बोल रहा है। उस पर व्याकरण, छन्द आदि का अंकुश नहीं लग सकता।

अन्त में पद ११० पृष्ठ ३६ में—

करें भाव से पाठ शत आठ पूरे,
फलों चार फल काम हों क्यों अधूरे ?
जहाँ 'श्री', निरञ्जन सदा है दिवाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(घ)

इस प्रकार कोई कवि अपनी वाणी के बारे में नहीं कह सकता । आर्ष ग्रन्थों में तथा सिद्ध पुरुषों की वाणियों में ही ऐसी सूक्तियां देखी जाती हैं ।

तात्पर्य यह कि 'श्री भवानी-शतक' किसी व्यावहारिक बुद्धियुक्त पुरुष की वाणी नहीं है, अपितु दिव्य भावापन्न सिद्ध की स्वयं स्फूर्ति है, इसको भक्ति भाव से ही गाया जा सकता है न कि इसपर टीका, टिप्पणी, समालोचना आदि की जा सकती है ।

निष्कर्षार्थ यों है —

निरञ्जन महासिद्ध-मुखपंकज निर्गताम् ।
भक्त्यापठन्तु तद्भक्ताः शिष्याश्चैव सहस्रशः ॥
श्रीभवानी स्तुतिमिमां भक्तकाम दुधां ध्रुवम् ।
इति नारायण कवेर्मतं जानन्तु साधवः ॥

श्री दत्त जयन्ती,
मार्गशीर्ष-पूर्णिमा,
श्रीसम्बत् २०१०
मुजफ्फरपुर
२०-१२-१९५३

निवेदक
श्री नारायण शास्त्री खिस्ते
(महामहोपाध्याय)
(भूतपूर्व प्रिन्सिपल-
गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज-बनारस)

(च)

तीर्थराज प्रयाग निवासी परम सन्त
श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी का विचार

ऐसे ब्रह्मनिष्ठ महात्मा के ग्रन्थ पर मुझ जैसे व्यक्ति की सम्मति का महत्व ही क्या है। जैसा कि श्री खिस्ते जी ने लिखा है “महात्माओं की वाणी की समीक्षा नहीं करनी चाहिये।”

मैंने उनकी गङ्गा यमुनी तिल-चावरी' हिन्दी-संस्कृत कविता पढ़ी है। उसकी लय सुन्दर है। यथार्थ लाभ तो वे ही उठा सकेंगे जो श्रद्धापूर्वक उसका मनन पाठ करेंगे।

भूषी-प्रयाग
आषाढ़ कृ० ४
संवत् २०१४

}

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

प्रकाशकीय

महात्मा श्री निरंजन भारत के उन इने-गिने दिव्य महापुरुषों में हैं जिन्होंने जनता की आध्यात्मिक उन्नति के कार्यों में विशेष रूप से योगदान दिया है। वे कई दिव्य ग्रंथों के प्रणेता हैं, जिनसे साधकगण अपनी साधना के पथ पर विशेष रूप से लाभान्वित हुये हैं। श्री भवानी-शतक उन्हीं ग्रंथों में से एक है। एक लम्बे अर्से से साधना के सीमित कक्ष में इस ग्रन्थ-रत्न की उपयोगिता देखने में आती रही। कालक्रम से साधकों ने इसे साधना के क्षेत्र में विशिष्ट गुण सम्पन्न पाया। आखिर सच्चे रत्न के पारखी, इसके दिव्य गुणों से आकर्षित होकर साधना क्षेत्र में प्रकट हो ही गये। वैद्य शिरोमणि श्री श्याम बिहारी तिवारी की पैनी दृष्टि इस ग्रन्थ-रत्न पर पड़ी बस क्या था—इसके पुनर्मुद्रण की शीघ्र ही एक योजना बन गई। इसी के फलस्वरूप श्री भवानी शतक की पुनीत प्रतियाँ आज साधकों के हाथ में हैं। तान्त्रिक अध्यात्म मण्डल की ओर से इसकी छपाई की व्यवस्था की गई है जो सर्वथा मौजूं भी है क्योंकि इस अध्यात्म मण्डल को महात्मा जी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त है। यह उन्हीं की पुनीत प्रेरणा का फल है कि तान्त्रिक अध्यात्म मण्डल ने अपने अस्तित्व की दिवस-दीप्ति देखी है।

प्रकाशन की ओर से वक्तव्य के नाते समुचित तो यह होता कि प्रस्तुत ग्रन्थ रत्न पर कुछ विशेष रूप से वक्तव्य दिया जाता । परन्तु सूर्य को दीपक दिखाने के समान यह प्रयास हास्यास्पद सा प्रतीत होता है । अतः इस सन्दर्भ में कतिपय शब्दों को ही पर्याप्त मान लेना पड़ता है । इसमें विराट् सृष्टि की महान केन्द्रीय शक्तितत्त्व की सर्वव्यापकता एवं सर्वशक्तिमत्ता की मूलभूत सिद्धान्त का रसात्मक प्रतिपादन किया गया है । इसके साथ ही साथ अधीनस्थ अन्य सिद्धान्तों पर भी प्रकाश डाला गया है । ये सिद्धान्त विशेषकर भारतीय तंत्र वाङ्मय में यत्र-तत्र सर्वत्र विखरे पड़े हैं । महात्मा जी ने उन सबों को समेकित रूप से अपनी सरल एवं सुबोध भाषा में काव्यात्मक सरसता से अणुप्राणित कर व्यक्त किया है । उन्होंने एक छोटे दायरे में अत्यन्त ही विशाल विषय वस्तु का समावेश कर दिया है । यह गागर में सागर भर देने के समान है । उन्होंने शक्ति तत्त्व के सर्वाङ्गीण सौष्टव-समन्वय पर एक अभूतपूर्व प्रकाश डाला है जो श्री भवानी शतक की ओज-स्विनी दिव्य पक्तियों से सहज ही हृदयंगम किया जा सकता है ।

इसके अतिरिक्त साधना के क्रम में श्री भवानी शतक के नियमित पाठ से उपलब्ध होने वाले दिव्य अन्तर्प्रवाह की अलौकिक अनुभूति भी बहुर्चचित है । यह इस ग्रन्थ रत्न की खास विशेषता है जो पहुँचे हुये महात्माओं की

दिव्य वाणी में ओत-प्रोत अलौकिक विद्युत-शक्ति का परिचायक है ।

छपाई के सम्बन्ध में अभिवांछित अनेक परिवर्धन की व्यवस्था कर इसे सब तरह से पाठकों के लिये सर्वाङ्ग सुन्दर एवं उपयोगी बनाया गया है ।

आशा है श्री भवानी शतक अपने प्रस्तुत रूप में विशेष लाभकारी होगा । पाठकों के लाभार्थ, महात्मा जी की ही दो और कृतियां श्री पादुकादशकम् और शिवाष्टक को भी इसके साथ ही सम्मिलित कर दिया गया है, जिससे इसकी उपयोगिता और बढ़ गई है ।

आशा है प्रकाशन का यह लघु प्रयास जनता जनार्दन की सेवा में समुपयुक्त सिद्ध होगा । इस उपलब्धि से ही प्रकाशन अपने प्रयास को सफल समझ सकेगा ।

व्यास जयन्ती आषाढ़ पूर्णिमा

श्री सम्बत् २०४२

२ जुलाई १९८५

श्री शिवपुरी, पटना

महावीरानन्द

(महावीर प्रसाद सिंह)

ॐ श्रीः पातु ॐ

श्री गुरुपादुका दशकम्

नमः श्रीदत्तनाथाय देशिकेन्द्रायशम्भवे ।

परमात्मस्वरूपाय अज्ञान-ध्वान्त भानवे ॥ १ ॥

निगमागमयोगानामाकरं करुणाकरम् ।

नत्वा श्री परमाचार्य दशकं कीर्त्तयाम्यहम् ॥ २ ॥

महामहापद्म-विराजिताभ्यां

त्रिरेख सोमोपरि संस्थिताभ्याम् ।

हंसास्पदाभ्यां मणिभूषिताभ्यां

नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्यां ॥ ३ ॥

श्री कुण्डली-कनक-काण्ड-सुशोभिताभ्यां

आम्नाय पञ्चैक प्रपञ्चिकाभ्याम् ।

कुलाकुलाभ्यां सशिवश्शिवाभ्यां

नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ ४ ॥

सहस्र प्राच्यर्क सुदोषिताभ्यां
 सहस्रपूर्णेन्दु समुज्ज्वलाभ्याम् ।
 सहस्र सौदामिनी चञ्चलाभ्यां
 नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ ५ ॥

मार्त्तण्ड-बह्नि-शशि त्र्यम्बकाभ्यां
 विशुद्ध सोमामृतदायिनीभ्याम् ।
 श्वेतारुणाकान्ति विमिश्रिताभ्याम्
 नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ ६ ॥

दशावतारघृणि अर्यमभ्यां
 दशाम्बिका रश्मिकलाधराभ्याम् ।
 लोकत्रयीणां शुचि मूलिकाभ्यां
 नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ ७ ॥

(३)

श्यामा रमा वाणि विलासिताभ्यां
त्रिविक्रमाभ्यां त्रिपुराम्बिकाभ्याम्
निरञ्जनाभ्यामरिभञ्जनाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपाद्काभ्याम् ॥ ८ ॥

जगन्महारण्य - कुठारिकाभ्यां
ससैन्य भण्डामुर-नाशिकाभ्याम् ।
मोहान्धकारैक प्रभास्वराभ्यां
नमोनमः श्रीगुरुपाद्काभ्याम् ॥ ९ ॥

अन्तर्तमा गोभिरनीक्षिताभ्याम्
अन्तर्मुखैकेन सुभासिताभ्याम् ।
योगप्रभा-लोहित लोचनाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपाद्काभ्याम् ॥ १० ॥

सविन्दुनादप्रणवात्मिकाभ्यां
वर्णालयाभ्यां निगमालयाभ्याम् ।
परात्पराभ्यामपरापराभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ ११ ॥

पूर्णाऽस्मिता शास्त्रावि मुद्रिकाभ्यां
सच्चिद्घनानन्द सुविग्रहाभ्याम् ।
परासुधा मानस-हंसिकाभ्यां
नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ १२ ॥

देवर्षिसिद्धर्षिभिरर्चिताभ्यां
नाथत्रयीणां परदेवताभ्याम् ।
योगीश्वराणां सुर-पादपाभ्यां
नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ १३ ॥

(५)

स्वस्त्यग्निजायाअजपाशयाभ्यां
सम्भित् सुधाभोधि सनातनाभ्याम् ।
तुरीयदाभ्याञ्च चतुःप्रदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ १४ ॥

पादुका दशकं दिव्यं
कीर्तितं श्री निरञ्जनैः ।
परदेव कृपा - प्राप्तं
स्वरूपस्थितिकारकम् ॥ १५ ॥

इति श्री निरञ्जनेन विरचितम्
श्री गुरुपादुकादशकम् सम्पूर्णम्



ॐ

शिवाष्टकम्

हीदत्त श्री विष्णु त्रिविक्रमाय
श्री दक्षिणामूर्ति वटेश्वराय
परम्परानुग्रह - कारणाय
नमोस्तु नाथाय निरञ्जनाय ॥ १ ॥

ॐ नादविन्दुश्च कलान्विताय
आम्नाय पञ्चैक प्रपञ्चकाय
पञ्चास्य पञ्चीकृत पञ्चकाय
नमोस्तु नाथाय निरञ्जनाय ॥ २ ॥

नभादि तन्मात्र प्रकाशकाय
श्मशानवासाय दिगम्बराय
कलौ महापातक नाशकाय
नमोस्तु नाथाय निरञ्जनाय ॥ ३ ॥

महामहाताण्डव		नर्तकाय	
लास्यप्रसन्नाय		रसेश्वराय	
मृदङ्ग	वीणास्वर	मोदिताय	
नमोस्तु	नाथाय	निरञ्जनाय	॥ ४ ॥

शिवाय	सत्याय	च	सुन्दराय	
सच्चिद्घनानन्द			सुविग्रहाय	
कर्पूर	गौराय		जटाधराय	
नमोस्तु	नाथाय		निरञ्जनाय	॥ ५ ॥

धामे	जगन्मातृ	सुशोमिताय	
वृषाधिरूढाय		वृषभध्वजाय	
पाणौ	महापात्र	प्रपूरिताय	
नमोस्तु	नाथाय	निरञ्जनाय	॥ ६ ॥

यज्ञ - स्वरूपाय	'सुरार्चिताय	
स्वाहास्वधाहूत	वरप्रदाय	
गणेश - गंगा	वटुकप्रियाय	
नमोस्तु	नाथाय	निरञ्जनाय ॥ ७ ॥

ह्रींकार	मायायुत	कामदाय
अष्टाष्टकैर्वेष्टित	अष्टदाय	
अनाद्यनन्ताय	सदाशिवाय	
नमोस्तु	नाथाय	निरञ्जनाय ॥ ८ ॥

माययापठितं स्तोत्रं शिवमन्त्रसमन्वितम्
पठेद्वा पाठयेद् भक्त्या शिवसान्निध्यमाप्नुयात्



तत्सद्ब्रह्मणे नमः

पुष्पाञ्जलि

वन्दौ श्री गुरुपादुका गणपति, श्री शारदा सारदा,
वन्दौ पितृ-पदाब्ज, दिव्य जननी, भागीरथी-ऊर्ध्वगा
श्री माता, जगदम्ब, ब्रह्म-ललिता, नारायणी, शाश्वती
“धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ।”

मनीषा मूर्च्छिता क्यों हो, वाग्देवी जागृता सदा,
प्रच्छन्ना-सतता-धारा, अनिरुद्धा सरस्वती ॥१॥
ग्रहे भास्करसे भर्ग, समर्पे चन्द्र चन्द्रिका,
दाता की देन, दाता ! ले वाङ्मयी सुमनाञ्जली ॥२॥

श्रीःपातु

मङ्गलाचरण

वन्दौ देशिक-नाथ, ब्रह्मनिष्ठवर-व्यासपद ।
जयति महाम्बा मात, आदि-शक्ति अखिलेश्वरी ॥१॥
देहभाव है दास, विमल जीव विश्वेशरज ।
चिद्बन आत्मविलास, निश्चलमती-निरंजनी ॥२॥
अजपा अगम अपार, हंसा अगम अपार ज्यों ।
सिन्धु पारावार, विन्दु पारावार त्यों ॥३॥
घट में रमते राम, घट-घट में ज्योति जले ।
पग-पग पै रसधाम, भाग्यहीन पावे नहीं ॥४॥
तव मन्दिर ब्रह्माण्ड, विराट् वैश्वानर, विभू ।
काल-चक्र की पांख, चँवर डुलावे रैन दिन ॥५॥
गाथा-छन्द-भवानि, स्तुति चारफल दायिनी ।
जयजय जयति महानि, दुस्तर भवसागर तरनि ॥६॥

❀ श्री भवानो शतक ❀

(१)

वनी विश्व की वाटिका है विशाला ।

कुजे कोकिला मत्त त्रिपुराम्ब बाला ।

कली, फूल, फल, पत्र में है समायी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२)

जषा-सिन्दुरी, आरुणी, रूपराशी

महामूल्य-माणिक्य, मौलि प्रकाशी ।

त्रिनेत्रा नमः शांकरी-भास्वरानी,

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१२)

(३)

धरी चूनरी, सप्तरंगी विचित्रा
निशानाथ-तिथि-अष्टमी भालचित्रा ।
प्रभा नासिका-रत्न तारा लजानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४)

विभूति रमी भाल सिन्दूर सोहे
मदोन्मादिनी लालिमा नेत्र मोहे ।
नमो कामकामेश्वरी अर्द्धनारी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(५)

कला पंचशर की, त्रिविन्दु स्वरूपा
मनू, देव, आचार्य, ध्याता अभेदा ।
हराद्वा-परा-चित्कला, श्री शिवानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१३)

(६)

महाप्राणशक्ति, जगादे प्रमञ्जन,
जहां शून्य में मध्य विन्दु निरञ्जन ।
किसी ज्ञान विज्ञान की पहुँच नहीं
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(७)

विना तालिका ओष्ठ ताला लगा क्या ?
कहो मर्म में तीक्ष्ण भाला लगा क्या ?
कहां ? बोल ब्रजभामिनी ! कृष्ण-काली,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(८)

रचे रास, रासेश्वरी अष्टदल में,
पिनाकी करें ताण्डवी नृत्य पल में ।
सजे साज, नटराज, शम्भू कपाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१४)

(९)

मृगी, भार्गवी, भर्ग अम्बार फैला
त्रिखण्डा, भूषा, खड्गयोनि, त्रिशूला /
भुकी तत्त्वमुद्रा, महापात्रपाणी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१०)

फणि-व्याल फुत्कार, वृष केसरी भी,
जटाजूट जय-गर्जना सुरसरी की /
करे लास्य, अटहास्य, काली कराली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(११)

वजे शंख, डमरू, तुरी और सिंगी
जगे वीर, वेताल औ, शृंगि, भृंगी /
शिवानाद से गूँज उठी सृष्टि सारी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१५)

(१२)

सभी सिद्धि गणसाथ, गणनाथ नाचे,
कलापी चढ़े, देव-चमुनाथ नाचें ।
भारी मंत्र-चैतन्य से ब्रह्मनाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१३)

छिछुम्-छुम्, छिछुम्-छुम्, ध्वनी नूपुरों की
पखावाज, डफ, खंजरी, वाँसुरी भी,
बजे मंजिरा, वीन, करताल, ताली,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१४)

धरा, सिन्धु, कैलास, नगराज नाचें
भरा व्योम तारावली वृन्द नाचें ।
झुले मानसर वीचियों में मराली,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१६)

(१५)

चमत्कार है विश्व विश्वम्भरी का,
नमस्कार, शम्भु, स्वयम्भू, हरीका ।
करें आरती सूर्य, द्विजराज-ज्ञानी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१६)

सदा-सर्वदा शारदा, श्री परा हो
सदा रत्न-करवा, सुधा का भरा हो ।
शुची-शाम्भवी-दिव्यता की निशानी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१७)

किया रक्त-अरिपान, अलि-पान जैसे,
किया भण्डदलनाश, खल-त्रास जैसे ।
दिया भक्त वरदान, वर-अभय वाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१७)

(१८)

जया, पार्वती, पद्मजा, पीतवस्त्रा,
त्रपा', तारिणी, भैरवी, छिन्नमस्ता ।
उमा, राज-राजेश्वरी, तू मृडानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१९)

तु ही शैलजा, ब्रह्मगा, चन्द्रघण्टा,
तु कुष्माण्डि, कात्यायनी, स्कन्दमाता ।
महागौरि, तू सिद्धिदा, कालरात्री,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२०)

तु ही 'आइ' आशापुरी, अर्द्धचन्द्रा
तु ही काल औ मोहरात्री महोव्रा ।
निशाघोर तू हे ! महीषासुरघ्नी !
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

त्रपा = लज्जा ।

(१८)

(२१)

तुही ही डाकिनी, राकिनी, लाकिनी तू

तु ही काकिनी, साकिनी, हाकिनी तू ।

तु ही याकिनी उर्ध्व-व-ब्रह्माण्डवासी,

परब्रह्म रूपां भवानी भजामि ॥

(२२)

रवी में प्रभा, चन्द्र में चंद्रिका तू

छवीसत्र में, भक्त में भावना तू ।

महायाग-श्री, सोम-पीयूष दात्री,

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२३)

तु ही आमरी, रक्तदन्ती, शताक्षी,

तु ही रेणुका, नन्दजा, कालहन्त्री ।

क्षुधा, क्षोभिणी, शोभना, मन्दहासी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१६)

(२४)

सती, जानकी, सीत, साकेत-धामा

तु हीं रुक्मिणी, राधिका सत्यभामा ।

पुरी द्वारिका, कृष्ण की राजधानी,

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२५)

स्वधातृप्तिदा, शान्तिदा-अग्निजाया

वषट्कार, ह्रींङ्कारिणी, रुद्रमाया ।

कृशा, कामिनी, दण्डिनी, शूलपाणी,

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२६)

तिरस्कारिणी, मोहिनी, अश्वरूढ़ा,

कुमारी, युवा-चंचला, प्रौढ़, वृद्धा ।

चरा, बहुचरा, धूमिनी श्रीधराणी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२०)

(२७)

सुधासार-शाकम्भरी अन्नदात्री,
निशामध्य स्वप्नावती, विश्वघात्री ।
प्रभा-पूँज से मोहरात्री सिरानी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२८)

अजा, सात्विकी, राजसी, तामसी तू
प्रजापालिनी, हारिणी, तापसी तू ।
निराकार साकार, जानीं अजानी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२९)

तु ही सिन्धु, सारस्वती, चन्द्रभागा
तु ही कौशिकी, गोमती, तुङ्ग, कृष्णा ।
तु कावेरि, मन्दाकिनी, हस्तवारी^१
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

१ “करतोया” पूर्व बंगाल की एक पवित्र नदी ।

(२१)

(३०)

त्रिवेणी तु ही गण्डकी, शोण, भीमा
तु गोदावरी, नर्मदा, ब्रह्मपुत्रा ।
गया, घर्घरा, यामुनी, गंग, रावी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३१)

विशालाक्षि, मीनाक्षि, कामाक्षि, कामा^१
तु ही पुष्करी, पावनी है ललामा ।
महाकाल, कालिंजरी, गुह्यकाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३२)

तु ही अम्बिका, अर्बुदा, चित्रकूटा
हरी-सिद्धि, गुह्येश्वरी, गृध्रकूटा ।
महालक्ष्मि कोलापुरी - कंजवासी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२२)

(३३)

तु ही मच्छ, कच्छी, वराही तु ही है
महायोग-निद्रा हरी की तु ही है ।
दशों विष्णु-अवतार की रूपखानी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३४)

तु ही वेदमाता', चतुर्विंश-वर्णा
तु ही जीव, शिव की वनी 'द्वासुपर्णा' ।
कला, नाद, विन्दू तु ही तार, तारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३५)

तु ही ज्ञान-इच्छा-क्रिया-शक्ति भासा
अनुप्राणिनी श्वास-निःश्वास वासा ।
अमा, पूर्णिमा, अष्टमी पर्वपाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

१ गायत्री

(२३)

(३६)

रमा-वैष्णवीं, विश्व-व्यापार शीला
तु ही चण्डिका चण्ड-संहार-लीला ।
भलो-भीम, मातंगिनी, भद्रकाली,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३७)

तरु-कल्प की मूल शाखादि तू है
अनादि प्रथा ब्रह्म-गाथा तु ही है ।
न आदी, इतिश्री, नहीं मध्यशाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३८)

तु ही वाक्यशक्ति स्तुति गान गाती ।
तु ही नेत्र ज्योति विराटी दिखाती ।
महामूर्ख संसार मां ! तू सयानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२४)

(३२)

तु ही दृश्य-दृष्टि, सलोपा अलोपा
तु एका, अनेका, अनेकाहि एका ।
ध्वनी मात्र बोले “नमश्चण्डिकायै”
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४०)

अखंडा तू ही, अच्युता, अद्भुता तू
अभिन्ना, प्रभिन्ना, जगद्व्यापिका तू ।
त्रयीलोक में तू हरानी ! समानी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४१)

जले ज्योति ज्वालामुखी हिङ्गुला की
तुही, भूचरी, खेचरी, विन्ध्यवासी ।
पती धूर्जटी की सती सिंहवाही,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२५)

(४२)

विधी-लेखिनी, लेखिका, लेख तू है
स्वयं-साक्षिणी, भोगिनी, भोग तू है ।
विधात्री, विधू-शेखरी, पंचपारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४३)

प्रभू की प्रभूता अकेली तु ही हो
विधू की कला अंतिमा मां ! तुही हो ।
जवानी जमाखर्च ने हार मानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४४)

सृजे तत्त्व छत्तीस, सृष्टी विकासी
सदाशिव जहां आदि से अन्तवासी ।
तु ही अष्टसिद्धी, निधी की निदानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२६)

(४५)

स्वयं आप में आप, श्रद्धा तु ही है
जपे श्वास निःश्वास, विश्वास तू है ।
नहीं शोक संताप, सेवें सुरानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४६)

मनो, धी, अहं भी चिदाकाश तू है
ध्वनी, घ्राण, जिह्वा, दृगाकार तू है ।
त्वगाकार तू मारुती, मन्मथारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४७)

तु ही ज्ञान, ज्ञाता, अनावर्त-ज्ञेया
तु ही ध्यान, ध्याता परावर्त-ध्येया ।
प्रमाता, प्रमेया, अनन्ता-प्रमाणी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२७)

(४८)

भुजा चार, दश, अष्ट, आयूध खड्गी
गदा, शूल, कोदण्ड, शर, पाश चक्री ।
शची वज्रिणी वृत्र-विच्छेदकारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४९)

प्रतापी, प्रचण्डा, प्रगल्भा, प्रबुद्धा
सुवीरा, सुवीर-प्रिया, वीर-वन्द्या ।
सुरेशी, महाव्योम केशी स्मरामि
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(५०)

अधः उर्ध्वं में रत्न सिंहासनीं तू
मणि-द्वीप में पंच-प्रेतासनी तू ।
रही दाहिने वाम महाराज रानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२८)

(५१)

कहे कौन मां ! योग-वेदान्त जाना ?

कहां मंत्र मां ! तंत्र का भी ठिकाना ?

भरी मूल से शून्य लौं श्री महानी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(५२)

तु ही वेद-वेदान्त की गङ्गाधारा

तु ही आगमी-योग शक्ती, अपारा ।

नमस्कार पदकंज-मकरंद लाली

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(५३)

परा, पश्यती, मध्यमा, वैखरी तू

स्वरा, व्यंजना, ह्रस्व, दीर्घाक्षरी तू ।

चरा, अक्षरा, मालिनी, मन्त्रव्राणी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(२६)

(५४)

कवी-काव्य-आलाप, आमोद तेरा
गिरा-गीत, संगीत तेरा बसेरा ।
श्रुती, ताल, लय, राग, स्वर, सामगानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(५५)

अति क्रोधिनी, क्रोधहीना, कृपाली
अहंकारशून्या, अहंकारशाली ।
“अयं, त्वं, अहं” एक, लीला निराली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(५६)

नव-द्वार की देह प्रासाद राजे
नवों में सदा एक तू ही विराजे ।
दशों से परे षोड़शाधार-धारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३०)

(५७)

महाभूत पांचों तुम्हारी विभूति
महाभाव आवेश है रुद्र - दूती
सधर्मा, अधर्मा धरें ध्यान ध्यानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भवामि ॥

(५८)

गुणाढ्या, गुणातीत, गौरीं, गणाम्बा
गुरु-शक्ति गूढ़ा, गुहास्था, पराम्बा ।
गुरु-बोध गम्पा, गुरु-तत्त्व दानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(५९)

त्रिलोकी, त्रिलिङ्गी, त्रिपुरान्तकी तू
त्रिमूर्ति, त्रिधा, सप्तधा-व्याहृति तू ।
त्रिविक्रम त्रिधा - पाद - संचारकारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३१)

(६०)

महाराष्ट्र-साम्राज्य-स्वातन्त्रिका तू
महानाट्य-की भूमिका, प्रेक्षिका तू ।
तू ही नाट्यशाला, नटी, सूत्रधारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६१)

सजी वीरसेना नरों-वानरों की
बचे लाज भी, भारती संस्कृती की ।
नराकार नारायणों की भलाई
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६२)

गजग्राह का युद्ध संसार-व्यापी
पराजय व्यथा देव को ना कदापि ।
अती मन्द ज्योती, तमिस्रा प्रहारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३२)

(६३)

तृपा से वृथा त्रस्त संसार सारा
वहे कुम्भ-वक्षोज से दुग्ध-धारा ।
सुम्हा दे मती, त्राण हो प्राण-प्राणी
परब्रह्म रूपां भवानीं भवामि ॥

(६४)

कहें कोई हस्ती हरी की कहाँ है ?
कहें जानकी-राम में जान क्या है ?
कहें "धर्म है धूर्त पाखण्ड भारी"
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६५)

"कहां पाप औ पुण्य पूजा, कहाँ की?"
"गिरे कौन ? उत्थान लज्जा कहां की?"
"भरो पेट जी ! भोग की भांग छानी"
परब्रह्म - रूपां भवानीं भजामि ॥

(३३)

(६६)

वृथा कल्पना, जल्पना, तर्क-शास्त्री

खिले चाँदनी ज्यों अमावस रात्री ।

सुनो सूर्य गाथा उलू की जवानी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६७)

दुकानें खुलीं धर्म की, राम लूटा

सभा संसदों में जगन्नाथ झूठा ।

वेचारे हरी की हुई मानहानि

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६८)

दनादन दगे मौत बन्दूक गोली

जरा होश भी ? ज्यों चरे गाय मोली ।

दया हो तुम्हारी, रहे सावधानी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३४)

(६६)

घने घोर घन में दमक दामिनी की
सरी व्योम सर में, जरा यामिनी सी ।
युवा-शाश्वती-चिन्मयी, चन्द्रिका सी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(७०)

मथा वारिधी दानवों-निर्जरो ने
हलाहल कपाली, सुधा पी सुरों ने ।
अभागे दिती-पुत्र के हाथ खाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(७१)

ऋषि "धार तलवार का मार्ग" बोले
कलावाज नटराज का ताज डोले ।
जहां "नान्य पन्था" वदे वेद-वाणी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३५)

(७२)

हरे क्यों हरी ? धर्म का मर्म जाने
विवेकी बने, कर्म का धर्म जाने ।
फँसे सेठ भी भूल करता किरानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(७३)

रती-भक्ति अन्धी, गति हीन ज्ञानी
बधीरी सुने शारदा की सितारी ।
बिना पैर-पर की गती व्योम-यानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(७४)

जगे अंग रोमांच गरुड़ध्वजा के
अलंकार भंकार जो सिन्धुजा के ।
टूटी द्वैत-अद्वैत की "शङ्खजाली"
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

३६)

(७५)

छिपे वीन के तार-पर्दे, निराले
स्वरों की कला, मीड़, जाले निराले ।
भृगु विप्र ने विष्णु को लात मारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(७६)

अयोध्यापती, तारिणी की कृपा से
बली मारुती, रामजी की दया से ।
सुनी कृष्ण-कात्यायनी की कहानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(७७)

गिरी-कर्णिका पुष्प से अर्चना हो
मणि-कर्णिका तीर्थ में तर्पणा हो ।
प्रसन्ना न क्यों हो पुरेशी-पुरानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३७)

(७८)

नहीं नासिका-रंघ्र का मार्ग रोके

नहीं पाद मोड़े, नहीं ताल ठोके ।

स्थिरा-दृष्टि-भूमध्य, तारा-ध्रुवाणी

परब्रह्म रूपां भवानीं भवामि ॥

(८६)

नहीं लेश सन्देह, जंजाल छूटे

जहां मोह शोकादि का तार टूटे ।

यदि भाव हो शाम्भवी शक्तिशाली

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(८०)

तु ही प्रेयसी, श्रेयसी, पातकारी

तु ही सूक्ष्म से सूक्ष्म औ स्थूलकायी ।

तु ही सिद्ध विद्याधरी, मुण्डमाली

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३८)

(८१)

सुधा-धार-बौछार, दुष्काल भागे
मिटे दुःख दुर्भाग्य, सौभाग्य जागे ।
ग्रहे कांच क्यों ? रत्नथाती लुटातो
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(८२)

किसी एक का ज्ञान, अज्ञान नाशे
उसी ज्ञान से ईश-आभा प्रकाशे ।
उसी राह की जो मिले राहदानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(८३)

कटाकट कराली वजे काल-दंष्ट्रा
प्रसन्ना, निरातङ्किनी ? तू न रुष्टा ।
कली-काल को दन्त-पंक्ति चवाती
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(३६)

(८४)

नहीं खेश राकेश की ज्योति जाती

मनो-बुद्धि की बात भी ना सुनाती ।

गये सो नहीं लौटते ब्रह्मज्ञानी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(८५)

परे पंच-परमेश से एक-ज्ञानी

परे द्वन्द्व-धुरफन्द से एक-ध्यानी ।

समाधी सभी शाश्वती, हैम-वारी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(८६)

कुटी, भव्य प्रासाद या जंगलों में

गिरे गर्त में, जाह्नवी के कुलों में ।

निजानन्द सर्वत्र जो शुक्ल-ध्यानी

परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४०)

(८७)

हृषीकेश-कौन्तेय की दिव्य-गीता
पढ़े या सुने जन्म-संग्राम जीता ।
फले भाव-भक्ति, टले आत्म-ग्लानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(८८)

स्वयं आपका आप उद्धार कीजै
स्वयं मित्र-शत्रु नहीं दोष दीजै ।
करे प्रार्थना, शुद्ध-बुद्धी सुझाती
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(८९)

ऋणी वा धनी की नहीं खोज कीजै
नहीं शत्रु या मित्र में ध्यान दीजै ।
रमे राम, क्यों मूढ़ ! मेधा नसानी ?
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४१)

(९०)

भरे रत्न से, कांच का खण्ड पाते
बड़ी भूल अज्ञान, "साक्षी" भुलाते ।
अवस्था त्रयी में चतुर्थी छिपानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(९१)

नहीं आत्म की जात, जाती शरीरी
सुधा-सिन्धु है एक, बीची घनेरी ।
अनेकों बना एक, संघर्ष जारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(९२)

बड़े कौन संसार में कौन छोटे ?
भरे एक ही नीर से सर्व लोटे ।
"अहं-पूर्ण" के खण्ड, खण्डाभिमानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४२)

(६३)

धरा, धाम, सम्पत्ति नहीं साथ देते,
रुके कण्ठ में प्राण नहिं प्राणि चेतें ।
कृपा मात्र पद-पद्म से उर्ध्वगामी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६४)

कभी भी किसी ने नहीं पार पाया
रुधे कण्ठ देवर्षि ने गान गाया ।
कमाया महारत्न कल्याणकारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६५)

चली थी हवा सप्तसिन्धु कहाँ थे ?
जली ब्रह्मज्योति शिवादि जहाँ थे ।
धरा-भर, धरा-धारिणी, तू हिमानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४३)

(६६)

रहा दास नौ मास, पाला तुम्हीं ने
पिलाया, रुलाया, खिलाया तुम्हीं ने ।
हँसाया सदा गोद, माया भुलानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६७)

कृपा-सागरी लोक में नाम तेरा
कृपा-पात्र मैं भी सुनो ! पुत्र तेरा ।
क्षमा धृष्टता की करो जो हमारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(६८)

गिरा राम के हाथ से एक डेला
डुबा नीरधी-नीर में था अकेला ।
हँसे मारुती “नाम का साथ नहीं”
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४४)

(९९)

बड़े भाग्य से मानुषी देह पाते,
बड़े भाग्य से राम का नाम पाते ।
बड़े भाग्य से पादुका भी पुजाती
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१००)

हृषीकेश, क्रोधीश औ' जामदग्नि
शुक्र, व्यास, वासिष्ठ, अत्री, अगस्ती ।
गुरु-गौड़, गोविन्द, शैवी प्रणाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१०१)

सभी देवकुल-कमल सिरताज तू है
सभी सिद्धजन बीच महाराज तू है ।
कहो कौन भूले ? महावाक्य वाणी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४५)

(१०२)

रहे संगती सज्जनों साधुओं की
हवा से वचे दुर्जनों की, खलों की ।
वसे वास वाराणसी, गंग - पानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१०३)

वजे नै सुरीली जहां में रुहानी
वसे दम-व-दम में नजाकत-रुहानी ।
नजारे, नजर, नाज को भी सलामीं
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१०४)

नहीं पाप संसार में क्षुद्रता सा
नहीं सार संसार में दिव्यता सा ।
परे जो रहे, सो बड़ा भाग्यशाली,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४६)

(१०५)

महापातकी नारकी भी न क्यों हो
त्रिधा ताप का भुक्तभोगी न क्यों हो ।
जपे मङ्गला, बाल दुर्गा त्रितारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१०६)

यदि विश्व में दुःख दावग्नि व्यापे
यदि प्राणि जन क्लेश-सन्ताप तापें ।
वसो शान्ति वन हृदय घर-घर दयाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१०७)

नया है नहीं विश्व में, ना पुराना,
नटी एक नारी धरे वेश नाना ।
भवानी-स्तुती भी नयी ना पुरानी,
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(४७)

(१०८)

वजी दुन्दुभी व्योम में दिव्यता की
गिरी पुष्पराशी सुरों के करो की ।
खुली मंजुपा राम की रत्न खानी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(१०९)

भजो राम-रामा, भजो पूर्ण-कामा
भजो सर्वदा श्री घनश्याम-श्यामा ।
भजे सो वने क्षुद्र से रावणारी
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

(११०)

करे भाव से पाठ शत-आठ पूरे
फलों चार फल, काम हों क्यों अधूरे ।
जहां "श्री", निरंजन सदा है दिवाली
परब्रह्म रूपां भवानीं भजामि ॥

ॐ पूर्णमदः, पूर्णमिदं, पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः ! शान्ति !! शान्तिः !!!

श्री तान्त्रिक अध्यात्म मण्डल



एक परिचय

परम सन्त अवधूत शिरोमणि पूज्यपाद श्री निरंजननाथ जी महाराज ने अपने जीवन काल में ही, कुछ आत्मीय शिष्यों से, एक तान्त्रिक अध्यात्म मण्डलके गठन की इच्छा व्यक्त की थी। सच पूछा जाय तो तान्त्रिक अध्यात्म मण्डल का बीज रूप में गठन उसी क्षण हो गया जिस क्षण परमपूज्य सद्गुरुदेव के अन्तःकरण में, ऐसे संगठन के निर्माण का संकल्प उदित हुआ। हालांकि उनके जीवन काल में, अध्यात्म मंडल सामाजिक धरातल पर सक्रिय न हो सका। फिर भी इन अनेक वर्षों के बीच महाराज श्री के आत्मीय शिष्यों के मध्य, साधना सम्बन्धी चर्चाओं के केन्द्र के रूप में इसका अस्तित्व बना रहा।

आज फिर परम पूज्य अवधूत शिरोमणि श्री निरंजननाथ जी महाराज के हम कुछ शिष्यगण उन्हीं की प्रेरणा एवं कृपा से श्री तान्त्रिक अध्यात्म मंडल को सामाजिक एवं राष्ट्रीय धरातल पर सक्रिय करने के लिए उद्यत हुये हैं।

इस प्रयास के अन्तर्गत ही महाराज श्री के श्रीमुख से निर्गलित श्री भवानी शतक को साधकों के उपयोग एवं लाभ के लिये प्रकाशित किया गया है ।

श्री तांत्रिक अध्यात्म मण्डल, श्री भवानी शतक में निरूपित तत्त्व ज्ञान के द्वारा समाज, राष्ट्र एवं विश्व में व्याप्त अशान्ति, दुःख एवं दरिद्रता को दूरकर शान्ति, सुख एवं समृद्धि को लाने का प्रयास करेगा ।

सम्पूर्ण जगत ही तंत्र है । उसकी व्यवस्था शैली तंत्रिका है । इस सम्पूर्ण तंत्र-तंत्रिका को संचालित करने का श्रेय उसमें अर्न्तलीन जगदीश्वरी शक्ति को है । यह जगदीश्वरी शक्ति ही उसकी तंत्री है । तंत्री की कृपा के बिना मनुष्य दुःखानुभूति से मुक्त नहीं हो सकता ।

उसकी कृपा कैसे प्राप्त की जाय ? इस पर अनुसंधान एवं पूर्व के गुरुओं के अनुभवों को प्रकाशित कर जन साधारण में वितरित कराना, मंडल का एक प्रमुख लक्ष्य है ।

यह स्पष्ट है कि शिष्य की शक्ति गुरु में अर्न्तनिहित होती है । हम अबोध एवं असहाय शिष्यों ने भी, श्री तांत्रिक अध्यात्म मंडल के माध्यम से, जिस महान कार्य को करने का संकल्प लिया है, उसकी प्रेरणा तथा उसे

पूर्ण करने की शक्ति, दोनों ही, परम कृपालु सद्गुरु श्री
निरंजननाथ जी के श्री चरणों में ही निहित है ।

श्री सद्गुरु के श्री चरणों की वन्दना ही हम शिष्यों
को सफलता की ओर उन्मुख करेगी ।

सद्गुरु के चरणों का दास

हयग्रीवानन्दनाथ

(श्याम विहारी तिवारी)

सचिव-तान्त्रिक अध्यात्म मंडल

विन्दु में सिन्धु

विन्दु में सिन्धु समाया !

यह अचरज कहां से आया ?

विन्दु में सिन्धु समाया !

चरण कमल की कृपा

सहज ही उलझा सुलझाया

प्रीत लगी थी प्रियतम से

जियरा जलाया—

इत उत दूढ़त नैन थके

हिय विच जलवा पाया

विन्दु में सिन्धु समाया

चेक चुकी चंडी

चन्द्र ने अमृत वरसाया

महा कमल बन हँसा

निरञ्जन गङ्गोत्तरी नहाया

विन्दु में सिन्धु समाया

